चीटियों का ट्रैफिक जाम?

सुबह से ही आईने के सामने खड़े हो कर रुद्रांश बार-बार श्री हरिवंश राय बच्चन जी की कविता को याद कर रहा था;

“नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है ॥
मेहनत उसकी बेकार हर बार नहीं होती ।
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती ॥”

आज उसे “हिंदी-दिवस समारोह ” में कविता-पाठ करना था। तभी माँ ने आवाज दी “जल्दी से नाश्ता कर के तैयार हो जाओ।” तैयार होकर दोनों लोग विद्यालय के लिए निकल पड़े।
अभी कुछ ही देर तो हुई थी घर से निकले हुए
रुद्रांश - “माँ कुछ करो न! इस ट्रैफिक जाम में तो हमारी कार बैलगाड़ी की तरह चल रही है।” रुद्रांश के चेहरे पर अब आभा की जगह चिंता दिखाई देने लगी थी।

तभी अचानक कार की रेडिओ से ये जानकारी मिली कि **“ लगातार हुई बारिश की वजह से हुगली नदी के पुल में दरार आ गयी है और ट्रैफिक पुलिस इस पुल पर गाड़ियों को नियंत्रित कर रही है। जिसकी वजह से पुल के पास ट्रैफिक जाम है। आप 2 से 3 घंटे तक जाम में फंसे रह सकते है।”** ये सुनते ही दोनों के होश उड़ गए। रुद्रांश ने दुखी स्वर में कहा “अब विद्यालय जा कर कोई फायदा नहीं है माँ, हमारे पहुंचने तक तो कार्यक्रम भी खत्म हो जायेगा। हम लोगों को अब घर लौटना चाहिए।” कुछ देर कोशिश कर के देखा माँ ने, शायद उनकी गाड़ी जाम से निकल जाये! लेकिन ऐसा नहीं हुआ और अंत में उदास मन से वो लोग घर आये और फिर माँ ऑफिस चली गयीं।
रुद्रांश बाहर निकल कर अपने छोटे से बगीचे में आ गया। अचानक उसकी नजर दो काली चीटियों पर पड़ी, कतार में चलती सैकड़ों चीटियों को तो बहुतों बार देखा था उसने, लेकिन ये तो बिलकुल अलग थीं। दोनों चीटियां मार्गदर्शक एवं अनुयायी की तरह चल रही थीं। पीछे वाली चींटी ये कोशिश कर रही थी की उसके सिर से निकले एंटीने हमेशा आगे वाली चींटी को छू पाए, और अगर कभी ऐसा नहीं हो पाता था तो दोनों चीटियाँ एक-दूसरे को खोजने लगती थीं। अब रुद्रांश काफी उत्साहित और आश्चर्यचकित हो रहा था। वाह! कितनी विविध है न जीव-जंतुओ की ये दुनिया? वो अपनी उदासी भूल चूका था। जिज्ञासावश उसने एक चींटी से पूछा “अरे, मैंने तो पहले कभी देखा ही नहीं तुमलोगो को! किधर रहती हो तुमलोग? और ये क्या कर रही हो?

एक चींटी ने बताया की हम लोग कुछ ही दिन पहले तुम्हारे घर की तरफ आये थे। हम अभी “टैंडेम रन” कर रहे हैं। तुम तो चींटियों की कोई कविता याद कर रहे थे न?

कविता की बात सुनते ही जैसे सांप सूँघ गया रुद्रांश को। चींटी ने पूछा “क्या हुआ! उदास क्यों हो गए?

रुद्रांश ने पूरी बात बताई। उसकी बात सुनते ही आस-पास की बहुत सारी चीटियां जोर-जोर से हसने लगीं।

रुद्रांश ने आश्चर्य के स्वर में पूछा- क्युँ हंस रही हो तुमलोग? मेरा मजाक बना रही हो ना ?

चींटी ने जवाब दिया - नहीं-नहीं ! **जाम में तो हम टैंडेम रन करने वाली चीटियां भी फंस जाती हैं। लेकिन हम इतने देर तक जाम में नहीं फंसते कि हमारे किसी जरुरी काम में देरी हो जाय। इसलिए हमलोग अपनी हंसी नहीं रोक पाए।**

अच्छा!!! अब रुद्रांश के चेहरे पर मुस्कराहट आ गयी थी। उसने पूछा

"तो तुम लोग भी जाम में फंस जाती हो?
ट्रैफिक पुलिस आती होगी न जाम हटाने के लिए?
कैसे देर नहीं होता तुमलोगो का जाम में फसने के बाद भी?
मुझे भी बताओ, मैं भी वैसा ही कुछ करूंगा ताकि आगे से देरी न हो।"
इतने सारे प्रश्न एक साथ! बताती हूँ भई एक-एक करके।

वैज्ञानिक हमें ***डायकम्मा इंडिकम*** नाम से बुलाते हैं। हमलोग सामाजिक कीट हैं और कॉलोनी में रहते हैं। जैसे मधुमक्खी की कॉलोनी होती है! हमारी कॉलोनी में 20 से 300 तक सदस्य होते हैं। कॉलोनी में अंडे देने वाली चींटी भी बाकि सभी बहनों की तरह ही दिखती है, वैज्ञानिक उसे "गैमेरगेट" बुलाते हैं। जब भी हमारा घर छतिग्रस्त हो जाता है तो हम लोग पास में ही किसी दूसरे सुरक्षित जगह में चले जाते हैं कॉलोनी के अंडे-लार्वे और प्यूपा के साथ। इसे वैज्ञानिक "कॉलोनी रिलोकेशन" कहते हैं। इसमें नए घर से अनजान कोई एक चींटी (फॉलोवर) उसके पीछे चलती है जिसको नए घर का पता होता है, उसे लीडर कहते हैं और इस प्रक्रिया को "टैंडेम रन" बोलते हैं। कॉलोनी के लिए ये वक़्त खतरों से भरा होता है, क्योंकि इस वक़्त सबों को घर से बाहर निकलना होता है, शिकारी हम पर नजर रखते हैं साथ ही बाहर की वातावरण का सीधा प्रभाव हमारे अंडे-लार्वों पर भी होता है। इसलिए हमारी कोशिश होती है की जल्दी से हम नए घर में चले जाएँ।

अब मैं तुम्हारे पश्नों का जवाब देती हूँ।

"तो तुम लोग भी जाम में फंस जाती हो?"

चींटी : हाँ, हमलोग भी जाम में फंसते हैं।

“कब और कैसे लगता है जाम तुमलोगो के ट्रैफिक में?”

चींटी : पाँच लेन वाली हाई-वे के मध्य में कहीं पर एक लेन की संकरी पुल की कल्पना करो और उसकी तुलना करो किसी सामान दुरी की पांच लेन वाले हाई-वे से जिसमे कोई पुल ही नहीं हो, तब वैसी संकरी रास्तों पर हमारी रिलोकेशन के वक़्त 18 गुना तक ज्यादा जाम देखने को मिल सकता है।

कौन शुरू करता है ये जाम लगाना?

चींटी : दो-तिहाई जाम तो वैसे लीडर्स लगाते हैं जो नए घर में किसी चींटी को पंहुचा कर पुराने घर की तरफ संकरी रास्तो से होते हुए लौट रहे होते हैं। अगले एक तिहाई से भी कम जाम के लिए जिम्मेदार होती हैं वो चीटियां और लीडर्स जो प्यूपा को अपने मैंडिबल (जबड़े) से पकड़ कर ले जा रही होती हैं। शेष जाम के लिए, अंत में वो चीटियां जिम्मेदार होती हैं जो अपने लीडर से पिछले जाम में फंसकर बिछड़ जाती हैं और पास में ही भटकती रहती है लीडर को ढूंढने के लिए।

क्या-क्या होता है जाम की वजह से ?

चींटी : जाम की वजह से लीडर्स की संख्या, और रिलोकेशन में लगने वाले कुल समय पर तो कोई खास अंतर नहीं पड़ता है परन्तु मज़े की बात तो ये है की हमलोग अठारह गुना तक के जाम बढ़ोतरी को सिर्फ डेढ़ गुना तक के टैंडेम रन वाले अतिरिक्त वक़्त से संतुलित कर लेते हैं।

ट्रैफिक पुलिस आती होगी न जाम हटाने?

चींटी : बिलकुल नहीं। वैसे तो हमारी कॉलोनी में कोई दूसरी कॉलोनी की चींटी आ जाये तो हमलोग उसे मार भगाते हैं, लेकिन जाम हटाने के लिए हमें किसी की भी जरुरत नहीं पड़ती।

कैसे देर नहीं होता तुमलोगो का जाम में फसने के बाद भी?

चींटी : हाँ, ये तो मजेदार प्रश्न था तुम्हारा।
रिलोकेशन के वक़्त तो सिर्फ एक ही ध्येय होता है सबका, कि जल्दी से जल्दी गैमेरगेट व सारी चींटी बहनों को नए सुरछित घर में ले आया जाये। जाम की स्थिति में, लीडर्स पुराने घर की तरफ न जाते हुए, संकरी जगह से पीछे मुड़ कर, टैंडेम रन कर के आती हुई चीटियों को रास्ता देती हैं। उस वक़्त संकरी जगह पर जाम में फंसी सारी चीटियां एक ही साथ, खुद-ब-खुद, हमेशा ही नए घर की तरफ मुड़ जाती है। फिर पलक झपकते ही जाम खुल जाता है।

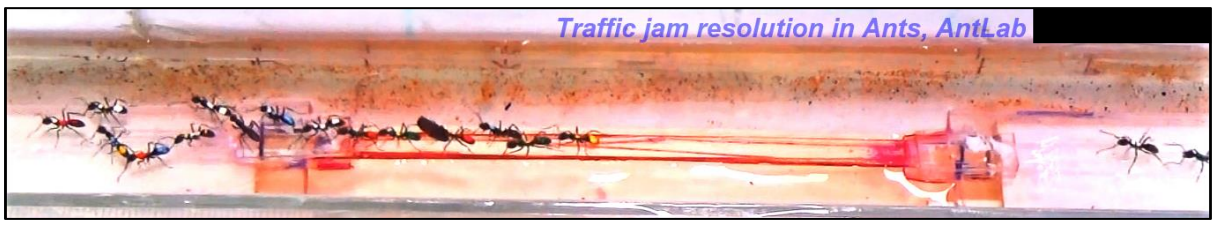

लीडर्स जब नए टैंडेम रन के लिए पुराने घर जा रहे होते हैं लेकिन जैसे ही बीच रास्ते में अपनी कॉलोनी की कोई भी दूसरी चींटी मिलती है तो उसे भी टैंडेम रन के लिए आमंत्रित करती हैं। इस तरह से लीडर को पुराने घर तक नहीं जाना पड़ता है और कुछ समय भी बच जाता है। एक और बात, जब कोई टैंडेम रन करता हुआ जोड़ा पुराने घर से निकलता है पर जाम में उनका संपर्क टूट जाता है, तब फॉलोवर को छोड़ कर लीडर बीच रास्ते से ही पुराने घर लौट जाता है दूसरा टैंडेम रन शुरू करने के लिए।

चींटी ने अपनी बात ख़त्म करते हुए कहा "तो बस इतनी सी थी हमारी कहानी।"

रुद्रांश उसकी बातें बड़ी एकाग्रता से सुन रहा था और सोच रहा था की इतनी छोटी सी चींटी में भी कितनी कुशलता होती हैं न! चींटी ने रुद्रांश के पैर में गुदगुदाते हुए पूछा "अरे कहाँ खो गए?"

"मैं तो ये सोच रहा था की क्यों न दुर्घटना स्थल पर जाम हटाने और एम्बुलेंस को बिना देर किये अस्पताल पहुंचने के लिए हमारी ट्रैफिक पुलिस को चीटियों से ही ट्रेनिंग करा दी जाये" रुद्रांश ने कहा।

हाँ क्यों नहीं! और सुनो, अपनी कविता में ये भी जोड़ लेना कि,

"नन्ही चींटी जाम में जब भी फंसती है,

पलक झपकते ही खुद सुलझा लेती है।"

……..